नाटकीय खेल और भाषा का विकास

मेघना बास्रि

बच्चे के घर की भाषा (प्रथम भाषा या L1) के विकास पर खेल का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह मानसिक और शारीरिक गतिविधियों को सार्थक तरीक़े से एकीकृत करता है, बच्चे को मज़ेदार व दिलचस्प लगता है और उसका मन लगा रहता है। खेल में अक्सर निजी बातें शामिल होती हैं (2-7 वर्ष की आयु के बच्चों में, L1 में), जिसे आमतौर पर 'ख़ुद से बात करने' के रूप में जाना जाता है और जिससे भाषा कौशलों का विकास होता है। जब बच्चा ख़ुद को खेल में संलग्न करता है तो वह अपने व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए ख़ुद से बातें करता है। समय के साथ-साथ ख़ुद से की जाने वाली बातें विचारों के रूप में प्रकट होती हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षार्थी के पास अपने ग्रहणशील और भावबोधक कौशलों का अभ्यास करने के पर्याप्त अवसर भी होते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, अपने स्वांग नाटक में उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा भी उस स्तर तक विकसित हो जाती है, जहाँ न केवल वे अपने कार्यों का, बल्कि खेल के परिदृश्य और भूमिकाओं का भी वर्णन कर सकते हैं जिससे उनमें प्रतितथ्यात्मक सोच की क्षमता पैदा होती है।

शुरुआती वर्षों में भी बच्चा किताबों और ऐसी अन्य सामग्री को देखकर शब्दों से परिचित हो जाता है जिन पर अक्षर/ छपी हुई इबारत हो। अपने पूरे स्कूली वर्षों में बच्चा खेल के माध्यम से लगातार अपने भाषा कौशल विकसित कर रहा होता है (सीफ़ेल्ट, 2001)। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा घर-घर खेलता है तो वह अपने साथियों के साथ बातचीत करता है जो कि भाषा के विकास में योगदान देने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक है। जब समन्वित गतिविधियों के साथ सावधानीपूर्वक योजना बनाकर नाटकीय खेल खेला जाता है तो वह बच्चों में सक्रिय ढंग से सीखने को बढ़ावा देता है।

नाटकीय खेल और प्रथम भाषा

मैं बचपन में अक्सर अपने छोटे भाई और एक चचेरे भाई के साथ खेला करती थी। हमारे पसन्दीदा खेलों में से एक था घर का खेल। दोपहर को जब घर के सभी बड़े लोग आराम कर रहे होते थे, तब हम यह खेल खेलते थे। मैं हमेशा माँ की भूमिका निभाती और मुझसे ढाई साल छोटा मेरा भाई और चचेरा भाई, दोनों, बच्चों की भूमिका निभाते। हर बार, हालाँकि हमारी भूमिकाएँ तो वही रहती थीं, लेकिन स्थिति अलग होती थी, जिसके बारे में हम खेल के पहले ही सोच लिया करते थे। हम प्रथम भाषा में बात करते और मुझे स्पष्ट रूप से ऐसे कई उदाहरण याद हैं जब मैं अपनी दादी, माँ और चाची के व्यवहार का अनुकरण किया करती थी, जो मेरे निकटतम आदर्श थे। हम अपने नाटक के अभिनय को और अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए घरेलू सामानों जैसे अख़बार, नोटबुक, रसोई के बर्तन आदि का उपयोग करते थे।

यह सहज व नाटकीय खेल का एक उदाहरण है। नाटकीय खेल से बच्चे प्रायः उन उद्देश्यों/ उदाहरणों के साथ प्रयोग कर पाते हैं जो साक्षरता विकास की ओर ले जाते हैं। मैं उपर्युक्त उदाहरण में अक्सर अख़बार पढ़ने का नाटक करती जैसा कि मेरी चाची हर सुबह कॉफ़ी पीते हुए करतीं थीं। मेरा भाई और चचेरा भाई होमवर्क करने का नाटक करने के लिए हमारी नर्सरी क्लास की नोटबुक (अपनी-अपनी कक्षाओं में अंक और अक्षर लिखने के अभ्यास के लिए उपयोग की जाने वाली) का उपयोग करते, जिसका निरीक्षण मैं ('माँ' के रूप में) करती। यह सभी पहलू बच्चे के भाषा विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। नाटक में जो संवाद होते हैं, वह रोल मॉडल की नक़ल से शुरू होते हैं और जल्द ही ऐसी रचनात्मक अभिव्यक्तियों में बदल जाते हैं जो बच्चे के अनुभवों और अवलोकनों में निहित होती हैं। बच्चे भाषा के साथ जितना अधिक प्रयोग करते हैं, उतनी ही सहजता और आत्मविश्वास से वे ख़ुद को खुलकर व्यक्त करने में सक्षम होते जाते हैं। प्रायः ये रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ साथ खेलने वाले बच्चों को एक-दूसरे से सीखने में भी मदद करती हैं।

शिक्षक द्वारा परिचित कहानियों पर कक्षा में इसी तरह के रोल-प्ले का आयोजन किया जा सकता है। कर्नाटक में कई शिक्षकों ने पहली से तीसरी तक की एमजीएमएल (मल्टी-ग्रेड, मल्टी-लेवल) कक्षाओं को प्रदान की गई अँग्रेज़ी किट की कहानियों का उपयोग करके ऐसे नाटक करवाए हैं। एक शिक्षक ने कुछ विद्यार्थियों को साथ लिया, रंगमंच की सामग्री बनाई और फिर विद्यार्थियों के साथ काम करके उन्हें *द फ़ैट किंग* नामक कहानी के पात्रों की भूमिकाओं के लिए तैयार किया। अगर विद्यार्थी अपने संवाद भूल जाते तो वे बेझिझक L1 और L2 (द्वितीय भाषा) को मिलाकर कहानी की जो पंक्तियाँ उन्हें याद आतीं, उन्हें ही बोल देते। कुल मिलाकर

पूरी कक्षा प्रेरित थी और अपनी भूमिकाओं में व एक-दूसरे के साथ उनकी भूमिकाओं के बारे में बात करने में, तल्लीन थी। शिक्षक द्वारा दी गई रचनात्मक अभिव्यक्ति की गुंजाइश बच्चों को न केवल रोल-प्ले में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है, बल्कि अप्रत्याशित परिस्थितियों में प्रतिक्रिया/ अनुक्रिया करना सीखने में भी उनकी मदद करती है। शिक्षक द्वारा तैयार किए गए नाटक के ऐसे अवसर शिक्षार्थियों में सम्प्रेषणशील आत्मविश्वास और क्षमता का निर्माण करते हैं, जो एक महत्त्वपूर्ण कौशल है और जिसकी कमी हमें अपने कार्य स्थल के कई शिक्षार्थियों में महसूस होती है।

अपने शोधपत्र में, मिलोनन व पैटर्सन (2009) ने कहा है कि बच्चे अपने नाटक के दौरान जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उसी भाषा का प्रयोग वे तब करते हैं जब वे पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं। इन शोधकर्ताओं ने निश्चयात्मक रूप से कहा है कि जो बच्चे नाटकीय खेल करते थे, उन्होंने कथानक (नाटक हेतु) के लिए भाषा का प्रयोग किया और इस प्रकार खेल के साथ पढ़ने और लिखने के कौशलों का संयोजन किया। इन कौशलों का अभ्यास करने से शिक्षार्थी अपने कौशलों और ज्ञान का उपयोग स्कूल में पाठों को पढ़ने और समझने के लिए कर पाते हैं।

द्वितीय भाषा का विकास

अँग्रेज़ी माध्यम की एक अन्य पहली कक्षा में जब शिक्षिका को अचानक किसी काम से बाहर जाना पड़ा तो एक छात्रा उठकर कक्षा में उनकी भूमिका निभाने लगी। मैंने देखा कि छात्रा ने अपनी पोशाक को ठीक-ठाक किया (ठीक वैसे ही जैसे उसकी शिक्षिका अपनी साड़ी को ठीक करतीं थीं) और फिर बोर्ड पर लिखे हुए अक्षरों को दिखाने के लिए छड़ी उठाई और अन्य विद्यार्थियों से शिक्षिका द्वारा कक्षा में पढ़ाए जा रहे अक्षरों की पहचान करने के लिए कहा। बाक़ी विद्यार्थियों ने शिक्षिका बनी हुई लड़की के ग़लत जवाबों को ठीक किया और उसके साथ इस खेल में शामिल हो गए। 6 साल की छात्रा द्वारा इतनी आसानी से शिक्षिका की भूमिका निभाने लगना कक्षा में सहज खेल का एक उदाहरण है।

उपर्युक्त परिदृश्य में अँग्रेज़ी भाषा शिक्षार्थियों के लिए L2 है। शिक्षार्थी विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं और उनकी L1 कन्नड़, तेलुगू से लेकर लम्बानी या उर्दू भी होती है। उनमें से कई अभी भी अपने मौन काल में थे (वह अवधि जिसके दौरान शिक्षार्थी सक्रिय रूप से उस भाषा को संसाधित कर रहे होते हैं जो वे अपने आसपास सुनते और देखते हैं, लेकिन इसे प्रस्तुत नहीं करते/ बोलते नहीं हैं), फिर भी वे 6 साल की छात्रा के साथ अँग्रेज़ी की कक्षा में यथासम्भव भाग लेते रहे। इस छोटी-सी गतिविधि में शामिल होकर कई विद्यार्थियों को इस बात का अवसर मिला कि वे शिक्षिका के लौटने से पहले उन अक्षरों को दोहरा लें (अपने सहपाठियों की मदद से) और कक्षा में सीखी हुई अँग्रेज़ी की कुछ अभिव्यक्तियों का अभ्यास कर लें। इस खेल में शामिल होने वाले बच्चों को न केवल वयस्क भूमिकाओं में क़दम रखने और शब्दावली का अभ्यास करने का मौक़ा मिलता है, बल्कि रचनात्मक अभिव्यक्तियों का विकास और अभ्यास भी होता है। जब 6 साल की लड़की को अपने सहपाठियों से अप्रत्याशित उत्तर मिलते हैं तो वह स्वतः एक ऐसी नई अभिव्यक्ति खोजने के लिए अपने अनुभवों और ज्ञान को खँगालती है जो खेले जा रहे परिदृश्य में उसे स्वीकार्य लगती हो। अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति पर सहपाठियों की प्रतिक्रिया से, इस खेल के मापदण्डों के भीतर, सम्भव है कि भाषा व अभिव्यक्ति की और भी खोज हो सके और उसकी सम्प्रेषणशील क्षमता को बढ़ावा मिल सके।

कर्नाटक के अधिकांश स्कूलों में, अँग्रेज़ी दूसरी भाषा/ L2 है। फिर भी छोटे शहरों और गाँवों में बहुत-से शिक्षार्थियों का इस भाषा से बहुत कम या बिल्कुल भी परिचय नहीं है। उनके लिए कक्षा ही एक मात्र ऐसा स्थान है, जहाँ उन्हें अँग्रेज़ी सुनने और उपयोग करने का अवसर मिलता है और अँग्रेज़ी के शिक्षक अँग्रेज़ी सुनने के उनके एकमात्र स्रोत हैं। L2 कक्षा में नाटकीय खेल आयोजित करने से शिक्षार्थियों को अँग्रेज़ी के साथ ज़्यादा सक्रिय रूप से जुड़ने व भाषा सीखने के लिए और अधिक आत्मविश्वास तथा प्रेरणा प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

एक अन्य उदाहरण में, एक शिक्षिका ने अपनी पहली कक्षा के विद्यार्थियों के साथ मिलकर एक बाज़ार का आयोजन किया। बाज़ार में प्रत्येक विद्यार्थी की एक दुकान थी, जिसमें बेचने के लिए तरह-तरह का सामान था। शिक्षार्थियों को सहयोग दिया गया और उनसे अपने सामानों का नाम अँग्रेज़ी में रखवाया गया, साथ ही उन्हें ग्राहकों को प्रत्येक वस्तु की क़ीमत भी अँग्रेज़ी में बतानी थी। यह पूरी गतिविधि शिक्षार्थियों के लिए एक खेल बन गई। प्रत्येक विद्यार्थी अन्य दुकानों पर जाता और वहाँ से सामान 'खरीदता', और कुछ समय बाद वह अपनी दुकान पर आने वाले अन्य दुकान मालिकों को अपना सामान 'बेचने' की प्रक्रिया में लग जाता। शिक्षिका ने विद्यार्थियों को अपने घरों से कुछ सामान लाने के लिए कहा था जैसे छोटे कपड़े, रबर बैंड, बालों में लगाने वाली क्लिप और खिलौना कार आदि और इन सामानों को दुकानों में रखा गया था। पूरी गतिविधि की योजना शिक्षिका द्वारा इस तरह बनाई गई थी कि शिक्षार्थियों को अँग्रेज़ी में बोलने में अधिक सहजता महसूस हो सके और उसके बारे में उनकी जानकारी और बढ़ सके। जब शिक्षार्थी इस पूरे खेल के साथ सहज हो गए तो शिक्षिका ने अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के माता-पिता को एक

प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया। इस बार माता-पिता बच्चों द्वारा बेचे जा रहे सामानों के दर्शक/ ग्राहक थे।

उस दिन तो मैंने देखा कि शान्त रहने वाले विद्यार्थी भी अपनी दुकान पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ बड़े आत्मविश्वास के साथ बात कर रहे थे। ऐसे कई उदाहरण सामने आए जिनमें विद्यार्थी पहले से याद किए गए संवादों को भूल गए और उन्हें तत्काल संवाद रचने पड़े। अपने माता-पिता या भाई-बहनों के साथ बाज़ार जाने के समय उन्होंने जो कुछ देखा-सुना था, ये अनियोजित संवाद निःसन्देह उन पर ही आधारित थे। यह संवाद ज़्यादातर L1 और L2 (अँग्रेज़ी) का मिश्रण थे, लेकिन लगभग हर बार बच्चों ने बड़े आत्मविश्वास के साथ इनका प्रयोग किया था। शिक्षार्थियों को अँग्रेज़ी का उपयोग करने और अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति में काफ़ी आसानी हुई। जिसकी सीधी वजह थी नाटक की गतिविधियों में उनकी निरन्तर भागीदारी और दी गई विभिन्न भूमिकाओं को निभाना। इस निरन्तर मिले अनुभव के परिणामस्वरूप शिक्षार्थी अपनी भूमिका के संवादों में संशोधन भी कर लेते थे।

नाटकीय खेल की गतिविधियों में मौखिक और गैर-मौखिक संचार के संयोजन से कई विद्यार्थियों को नाटक के परिदृश्य, भूमिकाओं और संवादों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नाटक की गतिविधि से L2 के शिक्षार्थियों को अपना ध्यान 'सही ढंग से' बोलने से हटाकर आत्मविश्वास से बोलने पर केन्द्रित करने में मदद मिलती है। L2 शिक्षार्थियों में यह बदलाव महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से बच्चे ऐसी भाषा के साथ प्रयोग करने से हिचकिचाते हैं जो स्कूल में अँग्रेज़ी पढ़ाए जाने के बावजूद उनके लिए काफ़ी हद तक अपरिचित होती है।

शिक्षक की भूमिका

सरकारी स्कूलों को चाहिए कि वे अब शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में सभी स्तरों पर नाटक का प्रयोग करने में सक्षम बनाएँ। ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न भूमिकाएँ निभाने, परिचित वातावरण में भाषा का प्रयोग करने, नाटकों के विविध परिदृश्य विकसित करने और नाटकों में अपने लिए भूमिकाओं की योजना बनाने में मदद मिल सके। नाटक के माध्यम से सीखना प्राथमिक विद्यालय तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह उच्च प्राथमिक कक्षाओं में भी एक प्रभावी शिक्षण उपकरण हो सकता है। L1 और L2 के सभी स्तरों पर शिक्षार्थियों के एलएसआरडब्ल्यू (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) कौशलों को विकसित करने के लिए व्यवस्थित रूप से नियोजित नाटक (विभिन्न प्रकार के भाषा सम्बन्धी खेल और गतिविधियाँ) का उपयोग किया जा सकता है। सरकारी स्कूलों के शिक्षार्थियों में आयु के हिसाब से उपयुक्त कौशलों की गम्भीर कमी नज़र आती है। इन कौशलों को सम्भवतः नाटक का उपयोग करके अधिक प्रभावी ढंग से विकसित किया जा सकता है। नाटक वह माध्यम हो सकता है जिसके द्वारा विषय सामग्री को इस तरह से पढ़ाया जाए कि शिक्षार्थियों के भाषा कौशलों का निर्माण प्रभावी ढंग से हो सके।

भले ही नाटक मुख्य रूप से शिक्षार्थी द्वारा स्वयं शुरू किया गया हो, लेकिन उसके माध्यम से सीखना तब और बढ़ता है जब शिक्षक प्रक्रिया को सुगम बनाएँ। नाटक के दौरान एक शिक्षक का हस्तक्षेप कई सम्भावनाओं के रूप में सामने आ सकता है - समस्या-समाधान और सवाल पूछने में शिक्षार्थियों की सहायता करने से लेकर अवांछित व्यवहारों को सही दिशा में मोड़ने तक। शिक्षक को चाहिए कि वे उन बच्चों को भी नाटक के कौशल सिखाएँ जिन्हें नाटक के परिदृश्य से जुड़ने में कठिनाई होती है। प्रायः बड़ों के हस्तक्षेप से बच्चों को खिलौनों पर आधारित नाटकों से व्यक्तियों पर आधारित नाटकों तक जाने में मदद मिलती है। इस बदलाव से ही बच्चे अपने खेलों में भूमिकाएँ अपनाना शुरू कर देते हैं।

शिक्षक को विशिष्ट परिणामों को मद्देनज़र रखते हुए नाटक से जुड़ी हुई गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। शिक्षार्थियों के अवलोकन से विकसित उद्देश्यों को ही उनके खेल के अनुभवों को गढ़ना चाहिए ताकि उनकी विकासात्मक प्रगति उच्च स्तर तक जा सके। शिक्षक को शिक्षार्थियों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और भाषाई स्तरों के आधार पर नाटक के अनुभवों का वैयक्तिकरण करना चाहिए। यदि किसी शिक्षार्थी को नाटक में कठिनाई होती है तो शिक्षक को चाहिए कि उसकी भूमिकाओं को सरल बनाएँ ताकि वे बच्चे के लिए स्पष्ट और परिचित हों। लेकिन अगर कोई शिक्षार्थी ज़्यादा अभिव्यक्तिशील है तो उसे ऐसी भूमिकाएँ दी जा सकती हैं जो अधिक जटिल हों।

L1 और L2 कक्षा में शिक्षार्थियों के सामने आने वाले कई मुद्दों को शिक्षक द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार किए गए नाटकीय खेल के माध्यम से सम्बोधित किया जा सकता है, फिर चाहे वह बोलने में शिक्षार्थियों की हिचकिचाहट हो या उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देना। कक्षा में नाटकीय खेलों का उपयोग करने की विभिन्न सम्भावनाओं की खोज शिक्षकों के लिए भाषा की कक्षा को जीवन्त बनाने और अपने विद्यार्थियों में सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देने के कई विकल्प खोल सकती है।

References

Bennett-Armistead, S. V. (n.d.). What Is Dramatic Play and How Does It Support Literacy Development in Preschool? Scholastic. https://www.scholastic.com/teachers/articles/teaching-content/what-dramatic-play-and-how-does-it-support-literacy-development-preschool/

Building Language and Literacy Through Play (n.d.). Scholastic. https://www.scholastic.com/teachers/articles/teaching-content/building-language-literacy-through-play/

Mielonen, A., & Paterson, W. (2009). Developing Literacy Through Play. Journal of Inquiry and Action in Education, 3 (1). Retrieved from https://digitalcommons.buffalostate.edu/jiae/vol3/iss1/2

Seefeldt, C. (2001). Playing to Learn: Activities and Experiences that Build Learning Connections (1st ed.). Gryphon House Inc.

The LEGO Foundation & UNICEF. (2018). Learning through Play. UNICEF. https://www.unicef.org/sites/default/files/2018-12/UNICEF-Lego-Foundation-Learning-through-Play.pdf



मेघना बास्रि वर्तमान में कर्नाटक के बल्लारी ज़िले में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ काम कर रही हैं। फ़ाउण्डेशन में शामिल होने से पहले, उन्होंने कुछ समय के लिए बेंगलूरु के एक सहायता प्राप्त स्कूल में हाई स्कूल के विद्यार्थियों की अँग्रेज़ी शिक्षिका के रूप में कार्य किया था। प्राथमिक स्तर पर अँग्रेज़ी पढ़ाने में उनकी रुचि हमेशा से रही है। उनसे meghana.baasri@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल